Shishta Stotram

शिष्टस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Shishta Stotram

File name : shiShTastotram.itx

Category : misc, vedanta

Location : doc_z_misc_general

Transliterated by : Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

Proofread by : Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

Latest update : April 18, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

April 18, 2020

sanskritdocuments.org

Shishta Stotram

शिष्टस्तोत्रम्

भज विश्रान्तिं त्यज रे भ्रान्तिं निश्चिनु शैवं निज रूपम् ।
हेयादेयातीतं सच्चित्सुखरूपस्त्वं भव शिष्टः ॥ १॥

रे! विश्रान्ति - उपराम को भज, भ्रान्ति - भ्रम को त्याग,
छोडने और पकडने से रहित सत् - सत्य, चित् -चैतन्य, सुख-
आनन्द रूप अपने शिव रूप का निश्चय कर, शिष्ट-सभ्य हो ।

दृश्यमशेषं त्वत्तोऽभिन्नं मा भैषीः किलः भूमानम् ।
विद्यात्मानं वेदनरूपं वेद शिरस्थं भव शिष्टः ॥ २॥

निश्चय सम्पूर्ण दृश्य - जगत् तुझसे अभिन्न है, (इसलिये)
मत डर, उपनिषदों में स्थित, अनुभव स्वरूप भूमा को आत्मा
जान, शिष्ट हो ।

तृणवत्त्यज धनवनितापुत्रान् लोकं शोकं भेद भवम् ।
इदमहमित्थं कलनां हित्वा पूर्णानन्दो भव शिष्टः ॥ ३॥

भेद से उत्पन्न हुए धन, स्त्री, पुत्र, लोक, शोक को तृण के
समान त्याग दे । "यह, मैं" इस प्रकार की कलना-मैल को त्याग
कर पूर्ण आनन्द स्वरूप शिष्ट हो ।

कृत्याकृत्ये त्यज रे दूरे विधिगोचरतां मार्गास्त्वम् ।
मानागोचररूपं ज्ञात्वा किं त्वं कर्ता भव शिष्टः ॥ ४॥

रे ! कृत्य-विधि कर्म, अकृत्य-निषेध कर्म और विधि
को बताने वाले मार्गों को तू दूर से त्याग दे, प्रमाणों से न जानने
योग्य रूप को जान कर क्या तू कर्ता है –नहीं है, शिष्ट हो ।

लोकविलक्षणचरितो भूया लोकातीतं, पदमिच्छन् ।
पावयः सकलाम्पृथिवीमेनामात्मारामो भव शिष्टः ॥ ५॥

लोक से अतीत-बाहर के पद की इच्छा करता हुआ लोक से विलक्षण मार्ग का चलने वाला हो, इस सब पृथिवी को पवित्र करता हुआ आत्माराम- आत्मा में रमण करने वाला शिष्ट हो ।

निन्दास्तोत्रे मानामानौ समदृष्टेस्ते किं कुरुताम् ।
कुरुतां लोकः कामं स्वेष्टं का ते हानिर्भव शिष्टः ॥ ६॥

निन्दा स्तुति और मान अपमान से तुझ समदर्शी को क्या करना है - कुछ नहीं, लोक अपनी इच्छानुसार कामना किया करें, तेरी क्या हानि है - कुछ नहीं, शिष्ट हो ।

शैवः शाक्तो गणपतिभक्तो वैष्णवसौराविति नाना
अज्ञात्वायं जाता लोके स त्वं शम्भुर्भव शिष्टः ॥ ७॥

शैव-शिव उपासक, शाक्त-शक्ति के उपासक, गणपति के भक्त, वैष्णव-विष्णु उपासक, सौर-सूर्य उपासक अनेक जिसको न जान कर लोक में हुए हैं, वह शम्भु तू है, शिष्ट हो ।

जलबुद्बुद्वज्जगदिदमखिलं पश्यन्नात्मनि तिष्ठ त्वम् ।
को वा मोहः लोकः को वोऽद्वैतदृशस्तव भव शिष्टः ॥ ८॥

इस सम्पूर्ण जगत् को जल के बबूले के समान जान कर तू आत्मा में टिक, तुझ अद्वैत देखने वाले को शोक कहां और मोह कहां इसलिये शिष्ट हो ।

अजपामन्त्रं देशिकवचनील्लब्ध्वा देवं स्वात्मानम् ।
ज्ञात्वा सहजावस्थायां वस भावातीतो भव शिष्टः ॥ ९॥

देशिक-सद्गुरु के वचन से अजपा मन्त्र को प्राप्त कर अपने आत्मा को जान कर सहजा - तुरीयावस्था में वास कर, भाव से अतीत शिष्ट हो ।

शिष्टस्तोत्रं ब्रह्मिष्टानां तुष्टिकरं स्यादिति कलये ।
उक्तावस्था सर्वेषां स्याद् गुरुकृपया किल बुद्धिमताम् ॥ १०॥

ब्रह्म की इच्छा करने वालो को यह शिष्ट स्तोत्र कलियुग में सन्तुष्टि करने वाला हो और गुरु कृपा से सब बुद्धिमानों को उपरोक्त अवस्था की निश्चय प्राप्ति हो ।

इति शिष्टस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

Shishta Stotram

pdf was typeset on April 18, 2020

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*